ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

VOLUME:III ISSUE II July-Sept.2019

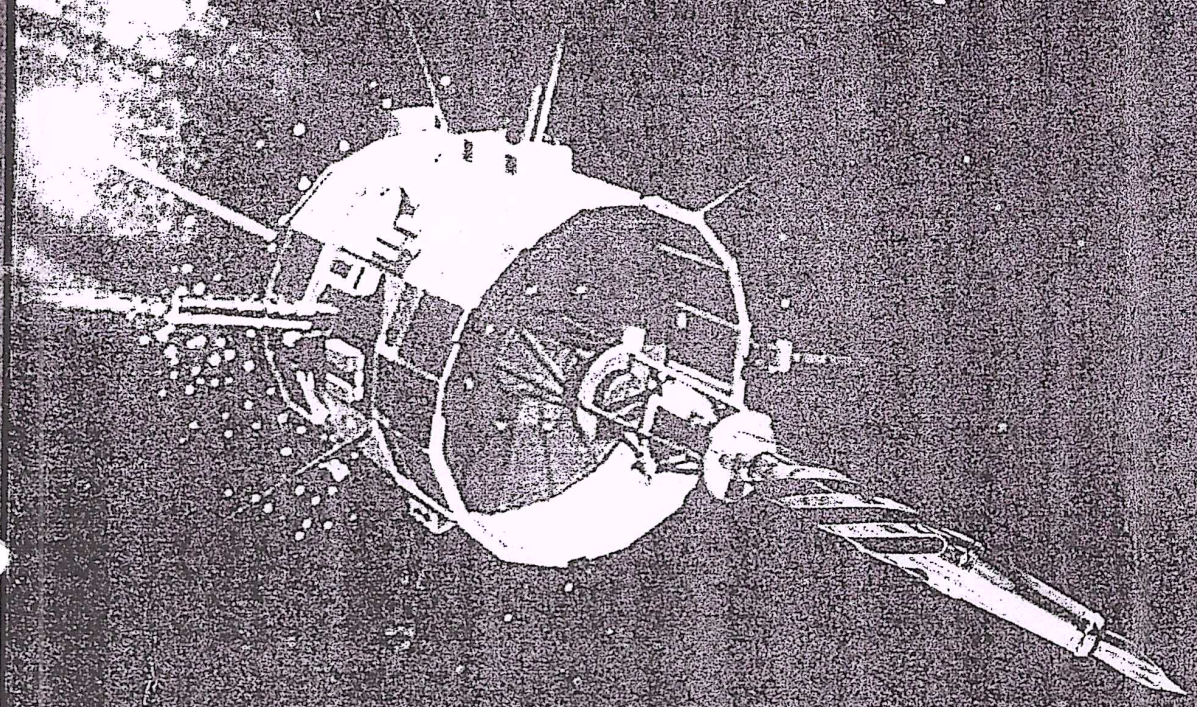

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Dr. Sarkate Sadashiv

Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

21	निसर्ग पुजक आदिवासी	प्रा. कविता वळवी	116
22	लोकसाहित्यातील विनोद	डॉ. नवनाथ गोरे	119
23	जागतिकीकरण आणि मराठी सण उत्सव	प्राचार्य डॉ. आशा मुंडे	122
24	'आदिवासी साहित्यातील वारली जमातीचे चित्रण'	प्रा. डॉ. माहेश्वरी गावित	128
25	आधुनिकता और वैज्ञानिकता : स्थिति और गति	प्रा. डॉ. बी. आर. नले	136
26	केदारनाथ सिंह के कविताओं में चित्रित विविध समस्याएँ	डॉ. भगवान पी. कांबळे	141
27	महादेवी वर्मा के काव्य मे करूणा और विरह वेदना का चित्रण	प्रा. डॉ. गिरि डी. व्ही.	145
28	हिन्दी साहित्य में महिला सबलीकरण	प्रा.कडेकर सी.जी.	149
29	'क्तिने पाकिस्तान उपन्यास' में ऐतिहासिक एवं समकालीन बोध	प्रा.डॉ. शेख मोहसीन रशीद	153
30	सूफी प्रेमाख्यान : काव्य परंपरा में जायसी का स्थान	प्रा. डॉ.उत्तम जाधव	157
31	जयप्रकाश नारायण आणि समाजवाद	प्रा. डॉ. रजनी बोबडे	162
32	विठ्ठल रामजी शिंदे यांचे सामाजिक योगदान	श्रीनाथ नामदेवराव शेळकीकर	169
33	नेतृत्वाचा आदर्श 'यशवंतराव चव्हाण'	डॉ.भुजंग विठ्ठलराव पाटील	174
34	भारतीय राज्यघटना व समता	प्रा.पटवारी दयानंद शंकरअप्पा	179
35	शेवटचा निजाम मीर उस्मानअलीचे धोरण	प्रा.डॉ.सुनिल रामचंद्र पुरी,	184
36	हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात आर्य समाजाचे योगदान : विशेष संदर्भ - कंधार तालुका	प्रा.बंडे वसंत निवृत्ती	194
37	रासायनिक घटकाच अतिवापर म्हणजे महाराष्ट्रातील शेती व्यवसायाचा विनाश !	प्रा.दोरवे श्रीमंत रघुनाथ	198
38	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या शिक्षण विषयक विचारांची उपयुक्तता	प्रा.सिद्धार्थ मुंगे	206
39	आर्थिक मंदीत रिझर्व्ह बँकेची भूमिका	डॉ.राजेश गंगाधरराव उंबरकर	209

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

केदारनाथ सिंह के कविताओं में चित्रित विविध समस्याएँ

डॉ. भगवान पी. कांबळे,
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
शासकीय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

सारांश :

आधुनिक युग में विभिन्न प्रकारों के साहित्य का सृजन की हो रहा है। जिसमें अनेक कवि एवं साहित्यकार विविध विषयओं को केन्द्रबिंदूओं में रखकर साहित्य निर्माण कर रहे है। इन कवियों की रचनाओं में विविध समस्याओं का चित्रण अंकित होता नजर आ रहा है। जैसे आज की वर्तमान युग में हमें महज मजबूर करनेवाली समस्याएँ है – किसानों की समस्या, नारी की समस्या, दलित लोगों की समस्या और आदिवासी समाज में जिन्दगी जिनेवाले लागों की समस्या आदि। इस युग में कवि अपनी रचनाओं द्वारा समाज में उपरोक्त सभी समस्याओं का निर्वाह करते हुए समाज परिवर्तन कर रहे है इसे नकारा नहीं जा सकता। परिणाम स्वरूप समाज के उन लोगो के समूह में एक प्रकार की जागृती होती नजर आ रही है। जिसमें राजेश जोशी, चंद्रकांत देवताले ,सूरजपाल चौहाण, नरेंद्र मोहन, नहेन्दू महर्षि, जयप्रकाश कर्दम, अरूण कमल, मंगलेश डबराल, कुसुम असंल, मन्नु भंडारी और .ष्णा सोबती आदि प्रसिद्ध कवियों का उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक लगता है। इसी कडी में केदारनाथ सिंह का नाम उल्लेखनीय रूप में से लिया जा सकता है।"

केदारनाथ सिंह के अनेक कविता संग्रहों में इन तमाम समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें – "तीसरा सप्तक की कविताएँ, प्रतिनिधि कविताएँ, जमीन पक रही है, अभी बिल्कुल अभी, यहॉ से देखो , अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ "तालस्ताय और साइकिल एवं सृष्टि पर पहरा'' आदि कविताएँ उनका प्रमाण है। उनकी कविताओं का अध्ययन और अध्यापन करते हुए यह महसूस होता कि , आज की वर्तमान परिस्थितिओं में उनका योगदान बडा ही सराहनीय है।

किसान की समस्याएँ :

हमारा देश खेती प्रधान देश होने के नाते किसानों का योगदान महत्वपूर्ण है। अपितु आज किसान की हालात बडी ही नाजूक दौर से गुजर रही है, प्र.ति ने उनके साथ न्याय नहीं किया है, बारिश की वजह से वो मजबूर हो गया है, बैंकों का ऋण, साहूकारों का ऋण आदि के बोझा तले उन्हें आत्महत्या करनी पड़ रही है। किसान समाज का अभिवाजक घटक है क्योंकि उनके बिना हम जी भी नहीं सकते। किसान अपने खेतों में इतनी मेहनत, परिश्रम कर हमें भूखा मरने जे बचा लेता है। इन सभी यर्थाथ को आज हम बखुबी से जानते है। ऋण के कारण वो अपनी जान भी गवॉ देता दिखाई दे रहा है। साहूकारों से लिए पैसे वो वापस लौटा भी नही सकता। किसान अपने बैल को अपने परिवार का सदस्य मानता है । मगर ऐसे कठिन परिस्थितियों में

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

किसान को अपना बैल भी बेचने की नौबत आती है। मुंशी प्रेमचंद के गोदान का होरी अपनी बेटी की शादी मे गो–दान भी नहीं कर सकता उसी तरह केदारनाथ सिंह के "अकाल में सरस" काव्य संग्रह मे चित्रित किसान को अपना बैल बेचना पडता है । इन्हीं समस्या का प्रमाण उस काव्य संग्रह की पॅक्तियाँ इस बात का गवाह बनती है। जैसे – कतित शाम ट्रक चले जा रहे है।

ट्रकों में लदे है बैल,
बिकने को जा रहे है।
ददरी मेले में ।"1

राजनैतिक समस्याएँ :

लोकतंत्र व्यवस्था में राजनीति महत्वपूर्ण रही है । राजनीति में चुनाव भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी राजनीति । उनका काम नयी–नयी योजना के तहत गरीब जनता को फायदा करें, उनका विकास करें, देश कस विकास करे। लेकिन यहाँ आज की राजनीति करनेवाले नेता लोग को देखकर बडे खेद के साथ कहना पडता है कि, चुवान में व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि पैसा महत्वपूर्ण रहा है। पैसों के बल पर अपने फायदे के लिए किसी भी हाद तक वे जा सकते है। चुनाव में वोट के लिए भोली–भाली जनता को झूठे वादे करके उनका विश्वासघात करते है। इतना ही नहीं कि, आज की युवा पीढियों को शराब की नशे में डूबाया जा रहा हैं, उनकी जिन्दगी के साथ खिलवाड किया जा रहा है। इसी यर्थाथ को केदारनाथ सिंहजी ने बडा ही करारा व्यंग किया है। साथ ही हम आपके वोट से नही बल्कि पैसों के बल पर चुनाव जीत कर आए है। एक स्थान पर केदारनाथ सिंह इस राजनीति समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए लिखते है कि –

भेडिए से फिर कहा गया है।
अपने जबडों को खुला रखे।
यह सारा देश , उसमें झॉककर,
देखना चाहता है अपना चेहरा ।
अपनी ऑखें,अपना ललाट ।"2

आम लोगों की समस्याएँ :

उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से आम लोगों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। यह समस्या वर्तमान में बड़ी प्रासंगिक है। अपने देश में गरीब लोग – गरीब ही रहे है और अमीर लोग अमीर ही बने रहे है। यहाँ दुर्भाग्य वश यह कहना पडता है कि, गरीब लोगों को एक समय का ठीक ढंग से खाना नहीं मिलता तो दूसरी ओर अमीर लोग अपने कुत्तों को अच्छा खाना खिलाते है। कवि का कहना है कि, गरीबों को चावल, आटा और दाल भी समय पर नहीं मिल पाती। कुछ चंद पैसे जमा कर बाजार जाते है तो वो भी उनके नशिब में नहीं होता... इस समस्या का चित्रण उनकी कविता में स्पष्ट

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

आवास देने की योजनाएँ सिर्फ कागज पर रही है। इन लोगें को आवास नहीं मिला, ना ही उसका फायदा। इन समस्याओं के बारे कवि की यह कविता बडी प्रासंगिक लगती है

"मैंने वहाँ बहुत . कुछ, बहुत– कुछ देखा।
पर नकशें मे। अपनी दीवार ।
पर टंगे हुए दुनिया के उस महान नकशे में
मुझो नहीं..... मिला नहीं मिला अपना घर।"6

निष्कर्ष :

अंत में निष्कर्ष के रूप में यह कहना अधिक उचित होगा कि, केदारनाथ सिंह की कविताओं में आज की वर्तमान परिस्थितिओं की भाग–दौड़ की जिन्दगी में आम आदमी विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त होता हुआ नजर आ रहा है। जैसे कि – किन्नर लोगों की समस्या, किसानों की समस्या, नारी की समस्या, दलित लोगों की समस्या और आदिवासी समाज में जिन्दगी जिनेवाले लोगों की समस्या आदि। मेरा मानना है कि, इन समस्याओं को दूर करने का साहस समाज व्यवस्थाओं में जिने वाले अमीर लोगों को और सरकार की ओर से समय – समय पर प्रयास किया जाए तो यह समस्याएँ खत्म होने में समय नहीं लगेगा और समाज में परिर्वतन की लहर आ जाएगी । अगर इस प्रकार का कदम होगा तो बेशक इसमें जरूर परिर्वतन होगा। मेरे विचार से तब कहीं जाकर साहित्य का उद्देश सफल होगा।

संदर्भ सूची

1. अकाल में सारस – केदारनाथ सिंह, पृ.80
2. अभी बिल्कुल अभी – केदारनाथ सिंह, पृ.87
3. अकाल में सारस –केदारनाथ सिंह, पृ.31
4. यहाँ से देखो–केदारनाथ सिंह, पृ.36
5. जमीन पक रही है – केदारनाथ सिंह, पृ.9
6. यहाँ से देखो – केदारनाथ सिंह, पृ.26

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad